सप्तम अध्याय
नीतिकथा–लोककथा

संस्कृत भाषा में कथाओं का विशाल साहित्य है। इन कथाओं का बीज वैदिक वाङ्मय में विस्तृत रूप से मिलता है। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत ब्राह्मणों और उपनिषदों में उपलब्ध कुछ कथाओं के स्रोत ऋग्वेद में प्राप्त होते हैं। इसमें आये संवादसूक्त' अत्यधिक आकर्षक कथा के रूप में प्रस्तुत हुए हैं।

कथा–साहित्य का विकास शुद्ध मनोरञ्जन एवं नैतिक उपदेश की दृष्टि से हुआ है। शुद्ध मनोरञ्जन की दृष्टि से विकसित कथाएँ 'लोककथा' कहलाई और सामान्य लोगों को नैतिक या धार्मिक उपदेश देने के लिए ***'नीतिकथा'*** का विकास हुआ । कथा – साहित्य की समृद्ध परम्परा विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में उपदेशों को रोचक बनाने के लिए ईसापूर्व में ही विकसित हो चुकी थी। सोने के अंडे देने वाली चिड़िया, गज–कच्छप, धूर्त्त मार्जार, चतुर शृगाल आदि महाभारत की प्रसिद्ध कथाएँ हैं। पालिभाषा में बौद्धों की मनोरंजक ***'जातक'*** कथाये हैं (प्रायः 550 कथाएँ)। जैनों का 'कथाकोश' अपने–आप में एक विशद साहित्य है।

लोक –कथा

लोक–कथा का विकास तब हुआ जब संस्कृत जन–सामान्य की

भाषा नहीं थी। ये लोककथाएँ मुख्यतः गुणाढ्यरचित पैशाचीग्रन्थ बृहत्कथा पर आश्रित हैं। यह ग्रन्थ प्राकृत भाषा में है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार इसका रचना–काल प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई0 है। बृहत्कथा में एक लाख पद्य थे। वर्तमान में यह ग्रन्थ अब अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। बृहत्कथा की तीन वाचनाएँ उपलब्ध हैं (1) नेपाली वाचना बुधस्वामी कृत *'बृहत्कथाश्लोकसंग्रह'* (2) प्राकृत वाचना–संघदासगणि कृत *वसुदेवहिण्डी* (3) कश्मीरी वाचना–क्षेमेन्द्रकृत *'बृहत्कथामञ्जरी'* और सोमदेवकृत *'कथासरित्सागर'*।

बृहत्कथाश्लोकसंग्रह– नेपाली वाचना का यह एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ है। हरप्रसादशास्त्री ने नेपाल से इसे 1893 ई0 में प्राप्त किया था। यह 28 सर्गों में विभाजित है जिसमें 4539 श्लोक हैं। यह एक अपूर्ण ग्रन्थ है। नरवाहनदत्त के अठाईस विवाहों में से केवल छह की ही कथा मिलती है। बुधस्वामी ने इस ग्रन्थ का निर्माण पाँचवीं शताब्दी में किया होगा, ऐसा अनुमान गुप्तनरेशों के गौरवमय स्वर्णयुग की छटा मिलने के कारण किया जाता है। भाषा का प्रवाह, अलंकारों का संयत प्रयोग एवं सरल शैली ये कथा के वैशिष्ट्य हैं।

बृहत्कथामञ्जरी कश्मीरी कवि *क्षेमेन्द्र* द्वारा पैशाची बृहत्कथा का संस्कृत में

किया गया संक्षिप्त संस्करण है। क्षेमेन्द्र कश्मीर नरेश अनन्त (1029–64 ई0) की राजसभा में कवि थे। इसमें अठारह 'लम्बक' है जिसमें सात सहस्र पद्य हैं।

कथासरित्सागर– यह बृहत्कथा का शिरोमणि ग्रन्थ है और विशालतम संस्कृत संस्करण भी। कश्मीरी पण्डित ***सोमदेव*** ने कश्मीरी नरेश अनन्त की पत्नी सूर्यमती के मनोरञ्जनार्थ इस ग्रन्थ की रचना 1064 और 1089 ई0 के बीच की थी। यह ग्रन्थ 18 लम्बकों में विभक्त है और पुनः ये लम्बक 124 तरंगों में बँटे हैं। इसमें 21,688 श्लोक हैं। अपने इस ग्रन्थ में सोमदेव ने भारतीय समाज का भी चित्रण किया है। इस ग्रन्थ की भाषाशैली सरस, सुन्दर प्रवाहमयी और वस्तु–प्रधान है।

अन्य लोककथाएँ

'वेतालपञ्चविंशति' में विक्रम और वेताल से सम्बन्धित 25 शिक्षाप्रद और रोचक कहानियाँ है । इसकी मुख्य कथा विक्रमसेन की है। विक्रमसेन एक तांत्रिक की सिद्धि में सहायता के लिए स्वयं मौन धारण कर वृक्ष पर लटकते हुए शव को कन्धे पर लाद श्मशान पहुँचाने की बात स्वीकार करता है। इस शव में वेताल का निवास है। श्मशान ले जाने के क्रम में वेताल विक्रम को

कहानी सुनाता है और अन्त में कहानी से सम्बद्ध कोई सवाल पूछता है। विक्रम के उत्तर देते ही उसका मौन टूट जाता है और वह वेताल पुनः पेड़ पर लटक जाता है। वेताल द्वारा सुनायी गयी इन्हीं कहानियों का इस ग्रन्थ में संग्रह है। बृहत्कथामञ्जरी के नवम लम्बक में 25 बेताल कथाएँ हैं, ये ही *'वेतालपञ्चविंशति'* के नाम से प्रसिद्ध है। ये कथाएँ कथासरित्सागर में भी है।

'सिंहासनद्वात्रिंशिका' को 'द्वात्रिंशत्पुत्तलिका' या विक्रमचरित भी कहा गया है। प्रत्येक कथा में भोज का उल्लेख होने से इसे 11 वीं शताब्दी ई0 के बाद की रचना माना जाता है। राजा भोज को भूमि में गड़ा हुआ विक्रमादित्य का सिंहासन मिला जिसमें बत्तीस पुत्तलियाँ लगी हुई थीं। इन पुत्तलियों ने राजा भोज को विक्रमादित्य के न्याय, सत्य, पराक्रम और उदारता से सम्बद्ध कहानियाँ सुनाईं और इन गुणों से युक्त व्यक्ति को ही सिंहासन पर बैठने का अधिकारी बताया।

'शुकसप्तति' सत्तर कथाओं का संग्रह–ग्रन्थ है। शुक अपने स्वामी मदनसेन के परदेश चले जाने पर उसकी पत्नी के विरह की पीड़ा को दूर करने के लिए प्रत्येक रात में एक–एक कथा सुनाता है। इन रोचक आख्यानों का उद्देश्य श्रोता को अनर्गल कार्यों से रोकना है। 14वीं शताब्दी में *'शुकसप्तति'* का फारसी अनुवाद किया गया।

नीतिकथाएँ

धार्मिक उपदेशों द्वारा सत्पात्र बनाने के उद्देश्य से इन कथाओं की रचना हुई। कहानियों में पशु–पक्षी को पात्र बनाकर मनुष्य को सदाचार, व्यवहार, आचरण, राजनीति आदि की शिक्षा दी जाती है। दैनिक जीवन में ध्यान रखने योग्य आवश्यक विषयों को सरल संस्कृत के द्वारा इन कहानियों में व्यक्त किया गया है। नीतिकथाओं का लक्ष्य मनुष्य को आदर्शवादी बनाने के साथ ही लोकव्यवहार में पटु बनाना भी है।

पञ्चतन्त्र

विष्णुशर्मा द्वारा रचित पञ्चतन्त्र बहुत प्राचीन है। इसका मूल रूप उपलब्ध नहीं है। अलग–अलग प्रान्तों में विभिन्न शताब्दियों में पञ्चतन्त्र के अनेक संस्करण हुए जिसमें तन्त्राख्यायिका, सरल पञ्चतन्त्र, पहलवी संस्करण, दक्षिण भारतीय पञ्चतन्त्र, नेपाली पञ्चतन्त्र, हितोपदेश मुख्य है। पञ्चतन्त्र में पाँच तंत्र (खंड) होने के कारण 'पञ्चतन्त्र' कहलाया – (1) मित्रभेद (22 कथाएँ); (2) मित्रसंप्राप्ति (6 कथाएँ); (3) काकोलूकीय (16 कथाएँ) ; (4) लब्धप्रणाश (11 कथाएँ) तथा (5)अपरीक्षितकारक (14 कथाएँ)। छह मुख्यकथाओं को जोड़ने से इनकी कुल संख्या 75 है।

महिलारोप्य नगर के राजा अमरशक्ति के तीन पुत्रों को शास्त्र में कुशल बनाने का वर्णन विष्णुशर्मा ने ग्रन्थ के आरम्भ में किया है–

" *पञ्चतन्त्राणि रचयित्वा पाठितास्ते* " पञ्चतन्त्र मुख्यतया गद्यरूप में है। कथाएँ गद्य में कही गई है लेकिन अधिकांश सूक्तियाँ पद्य रूप में हैं। इन पद्यों द्वारा पाठक को व्यवहार–कुशल बनाना ही लेखक का उद्देश्य है। पञ्चतन्त्र का गद्य, सरल, प्रवाहपूर्ण और विषय को स्पष्ट करने में पूर्णतया सफल है। वाक्य–विन्यास में यथासम्भव समास का कम प्रयोग है। कथा का प्रत्येक वाक्य कथा को आगे बढ़ाता है। कथा–प्रस्तुतीकरण की अद्भुत शैली ही पञ्चतन्त्र की विशिष्टता है। कथा समाप्त होने पर श्लोक के माध्यम से उसकी प्रथम पंक्ति में शिक्षा का प्रतिपादन है तथा श्लोक की दूसरी पंक्ति सूत्र–रूप में उदाहरण व्यक्त करती है जो आगे की कथा को भी इंगित करती है जैसे –

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्?
वने सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन निपातितः।।

1.217

(अर्थात् जिसे बुद्धि है उसे ही बल है। निर्बुद्धि को बल कहाँ? जैसे वन में रहनेवाला एक मदोन्मत्त सिंह शशक के द्वारा मारा गया ।) श्रोता उदाहरण को सुनते ही पूछता है – *'कथमेतत्'* (यह कैसे) और इस प्रकार फिर आगे की कथा प्रारम्भ होती है।

दो मित्रों के बीच फूट डालने की कथा 'मित्रभेद' में ; अनेक

बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते'' (1/8) और अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में हितोपदेश पूर्णतया सफल रहा है। प्रत्येक भाग की 4 कथाओं को मिलाने पर इस ग्रन्थ में कुल 43 कथाएँ हैं। हितोपदेश में पञ्चतन्त्र की शैली का अनुसरण किया गया है। लेकिन 'हितोपदेश' में पद्य पर अधिक बल दिया गया है। इसके कुछ पद्य *'कामन्दकीयनीतिसार'* से संकलित है। 'हितोपदेश' की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यूरोप की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ है।

अन्य नीतिकथाएँ

जैन और बौद्ध कवियों ने संस्कृत में अनेक नीतिकथाएँ लिखी हैं। आर्यशूर द्वारा रचित *'जातकमाला'* विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इसमें बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाएँ गद्य पद्यात्मक काव्यशैली में निबद्ध है। इस ग्रन्थ का एक अन्य नाम भी है–*'बोधिसत्त्वावदानमाला'*। जैन नीतिकथाओं में *'उपमितिभवप्रपञ्चकथा'* महत्त्वपूर्ण है जो 906 ई0 में सिद्धर्षि नामक जैन विद्वान ने लिखी है। *'भरटकद्वात्रिंशिका'* नामक जैन कथाग्रन्थ ब्राह्मणों की कटु आलोचना से युक्त है। हेमविजयगणि की रचना *'कथारत्नाकर'* धर्म–प्रचार के उद्देश्य से की गयी है। 15वीं0 शताब्दी में *जिनकीर्त्ति* ने दो कथा–ग्रन्थ लिखे – *(1) चम्पकश्रेष्ठिकथा (2) पालगोपालकथानक।*

उपयोगी मित्र बनाने एवं नीति के अनुकूल कथाएँ 'मित्रसंप्राप्ति' में है। बिना विचारे काम करने का दुष्परिणाम *'अपरीक्षितकारक '* में वर्णित है। *'काकोलूकीय'* में मित्र बने हुए शत्रु पर विश्वास नहीं करने से सम्बन्धित कथाएँ हैं। बुद्धिमान बुद्धि बल से जीत जाता है तथा मूर्ख हाथ में आयी वस्तु को किस प्रकार खो देता है, ऐसी शिक्षाप्रद कहानी *'लब्धप्रणाश'* में है।

व्यवहारकुशलता की शिक्षा पाने के लिए पञ्चतन्त्र जैसा ग्रन्थ विश्व–साहित्य में नहीं है। इस ग्रन्थ का सार्वदेशिक और सार्वकालिक महत्त्व है। पशु–पक्षियों की कथाओं द्वारा उपदेश प्राप्त होना भी पञ्चतन्त्र की लोकप्रियता का कारण है। इस ग्रन्थ की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लग सकता है कि इसके 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

हितोपदेश

पञ्चतन्त्र पर आधारित नीतिकथाओं में सर्वाधिक प्रचलित 'हितोपदेश' है। इसके रचयिता नारायण पण्डित थे जिनके आश्रयदाता बंगाल के राजा धवलचन्द्र थे। इस ग्रन्थ का काल 10वीं0 –11वीं0 शताब्दी ई0 माना जा सकता है।

'हितोपदेश' में चार भाग है– *मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह तथा सन्धि* । बालकों को नीति की शिक्षा देना ही हितोपदेश का लक्ष्य है– *कथाच्छलेन*

अभ्यास

1. लोककथा किसे कहते हैं? सोदाहरण वर्णन करें।
2. नेपाली वाचना से सम्बद्ध कथा ग्रन्थ का समीक्षात्मक वर्णन करें।
3. 'वेतालपञ्चविंशति' कथाग्रन्थ का विवेचन करें।
4. सत्तर कथाओं का कौन–सा ग्रन्थ है? उल्लेख करें।
5. नीतिकथा का अर्थ बताते हुए इसके उदाहरण ग्रन्थ भी बताएँ।
6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें–

   हितोपदेश, कथासरित्सागर, बृहत्कथाश्लोकसंग्रह, द्वात्रिंशत्पुत्तलिका।

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

   (i) 'शुकसप्तति' का अनुवाद .... भाषा में हुआ है।

   (ii) पालिभाषा में बौद्धों की .... कथाएँ हैं।

   (iii) जैनों के कथाग्रन्थ का नाम .... है।

   (iv) पंचतंत्र के पाँच तन्त्र हैं .... (1) .... (2) .. ..(3) .... (4)........................ (5) ....

   (v) राजा अमरशक्ति .... ग्रन्थ के पात्र हैं।

(vi) विग्रह,संधि, सुहृद्भेद .... ग्रन्थ के भाग हैं ।

2. *स्तम्भ 'क'* से *स्तम्भ 'ख'* का सुमेल करें–

स्तम्भ 'क'	*स्तम्भ 'ख'*
1. क्षेमेन्द्र	क. कथासरित्सागर
2. विष्णुशर्मा	ख. नारायण पण्डित
3. सोमदेव	ग. कथारत्नाकर
4. हितोपदेश	घ. पंचतंत्र
5. हेमविजयगणि	ङ. बृहत्कथामञ्जरी